

## 5th Battalion The Rajput Regiment

The battalion was raised in 1825 as the 2nd Extra Regiment of the Bengal Native Infantry at erstwhile Cawnpore. It has a rich and glorious history spanning two centuries, throughout which, the battalion has consistently displayed bravery, resilience and sacrifice across diverse conflicts and terrains.

In 1828, it was renamed as 70th Bengal Native Infantry. Early campaigns in which the battalion was inducted include the Battle of Maharajpur (1843) and the Second Sikh War (1848-49), earning battle honours of Punjab, Chillianwallah and Gujarat. Serving with the Indian Expeditionary Force under British rule, the regiment saw action in China (1858-59), Bhutan (1865), and the Second Afghan War (1878-80) where the battalion was honoured with Battle Honours of China, Bhutan and Afghanistan. The saga of courage followed with the Burma War (1885-87) and the Hazara Expedition (1891) where the battle honour of Burma was bestowed on the Battalion. As the 11th Rajputs, the regiment fought in World War I across multiple theatres, including France, Egypt, and Mesopotamia, and later in the Afghan War (1919) earning the Battle Honour of Mesopotamia. Re-designated as the 5th Battalion, 7th Rajput Regiment, it fought its epochal last stand and suffered heavy losses defending Hong Kong during World War II where it earned its last pre-independence battle honour of Hong Kong. Unfortunately, the magnitude of loss of personnel due to death, and being taken prisoners of war was so grave that the battalion had to be demobilised after World War II. Captain Mateen Ahmed Ansari was posthumously awarded with George Cross, the only one held by the entire Rajput Regiment, for his unwavering courage in the face of brutal Japanese forces.

The saga of valour does not end here. The Battalion was re-raised as 5th Battalion of the Rajput Regiment in 1962, by Lt Col Brijpal Singh Vr C at Fatehgarh. Post re-raising, the battalion participated in the 1965 and 1971 Indo-Pak wars, and Operation Pawan in Sri Lanka, where it again demonstrated its mettle. During Operation Pawan, Hav Naipal Singh was posthumously awarded Vir Chakra for supreme sacrifice against the fierce and resilient LTTE.

The battalion also served in Operation Rakshak at challenging locations in the high altitude areas and Operation Vijay. The battalion notably achieved an unscathed tenure during Operation Meghdoot on the challenging Siachen Glacier, a rare feat for any unit guarding the frozen frontier. The Battalion

has a unique distinction of presenting Guard Of Honour to three presidents of India, namely Dr APJ Abdul Kalam, Dr Pranab Mukherjee and Shri Ramnath Kovind. In the year 2018, the battalion represented the country at a global platform in the Ex SCO Peace Mission held at Chebarkul, Russia, one of a kind exercise which saw participation of seven foreign countries including Russia, China and Pakistan. It was the first instance when Indian and Pakistani forces participated in a friendly military exercise. With four consecutive unit citations in last decade, including 02 x Chief of Army Staff Unit Citation for its challenging tenures in the field at Kupwara and Poonch and 02 x GOC-in-C Unit Citations at Jutogh and Sri Ganganagar for exceptional performance of duties in peace tenure, the battalion is one of the most professional infantry units of the Indian Army.

During its glorious 200 years, the Rajputs have proved their mettle while fighting in frozen glaciers, mountains, plains, beaches and deserts. Its sterling performance has always showcased professionalism at the epitome of excellence. The brave hearts from this unit have risen to the occasion and displayed their enduring spirit, with utter disregard to their personal safety, laying down their lives in the service of the nation. Due to its glorious history, presently the battalion is acknowledged as Prachand Paanch.

The list of gallantry/distinguished awards bestowed upon the battalion includes 1 Param Vishisht Seva Medal, 3 Ati Vishisht Seva Medal, 2 Vir Chakra, 1 Shaurya Chakra, 16 Sena Medal (Gallantry), 2 Yudh Seva Medal, 5 Mentions-in-Despatches, 25 Chief of Army Staff Commendation Cards, 19 Vice Chief of Army Staff Commendation Cards, 82 GOC-in-C Commendation Cards and 2 Chief of Integrated Defence Staff Commendation Cards.

Department of Posts is proud to release commemorative stamps on the Rajput Regiment, celebrating their 200 years of courage, valour and contribution to protecting the nation.

### Credits:

Stamp/FDC/Brochure/ : Ms. Ravneet Kaur

Cancellation Cachet

Text : Referenced from content provided by Proponent



विवरणिका BROCHURE

## 5वीं बटालियन द राजपूत रेजिमेंट

राजपूत बटालियन की स्थापना वर्ष 1825 में कानपुर में बंगाल नेटिव इन्फैंट्री की दूसरी अतिरिक्त रेजिमेंट के रूप में की गई। इस बटालियन का दो सदी पुराना इतिहास अत्यंत समृद्ध एवं गौरवशाली है। अपनी स्थापना के बाद से इस बटालियन ने विभिन्न सैन्य संघर्षों एवं दुर्गम भूभागों में बहादुरी, दृढ़शक्ति एवं बलिदान का प्रदर्शन किया है।

1828 में इसका नाम बदलकर 70वीं बंगाल नेटिव इन्फैंट्री कर दिया गया। इस बटालियन को शुरुआत में महाराजपुर के युद्ध (1843) और द्वितीय सिख युद्ध (1848-49) में शामिल किया गया। जिसमें इसने पंजाब, चिलियानवाला और गुजरात के युद्ध सम्मान अर्जित किए। ब्रिटिश शासन के अधीन भारतीय खोजी अभियान बल के साथ काम करते हुए, इस रेजिमेंट ने चीन (1858-59), भूटान (1865) और द्वितीय अफगान युद्ध (1878-80) में भाग लिया, जिनके लिए इसे चीन, भूटान और अफगानिस्तान के युद्ध सम्मानों से सम्मानित किया गया। साहस की यह गाथा बर्मा युद्ध (1885-87) और हजारा अभियान (1891) के दौरान भी जारी रही, जिसमें इस बटालियन को बर्मा का युद्ध सम्मान प्रदान किया गया। इस बटालियन ने 11वीं राजपूत रेजिमेंट के रूप में, प्रथम विश्व युद्ध के दौरान फ्रांस, मिस्र और मेसोपोटामिया सहित कई स्थानों पर युद्ध लड़ा। तत्पश्चात बटालियन ने अफगान युद्ध (1919) में मेसोपोटामिया का युद्ध सम्मान प्राप्त किया। 5वीं बटालियन, 7वीं राजपूत रेजिमेंट के रूप में इसने द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान हांगकांग की रक्षा करते हुए निर्णायक युद्ध लड़ा। इस युद्ध के दौरान इस बटालियन को भारी नुकसान उठाना पड़ा। हालांकि इस बटालियन ने स्वतंत्रता-पूर्व का हांगकांग का अपना अंतिम युद्ध सम्मान अर्जित किया। दुर्भाग्यवश, इस युद्ध के दौरान बड़ी संख्या में सैनिकों के शहीद हो जाने अथवा बंदी बना लिए जाने के कारण इस बटालियन को विघटित करना पड़ा। इस बटालियन के कैप्टन मतीन अहमद अंसारी ने जापानी सेना के नृशंस हमलों का सामना करते हुए अदम्य साहस का प्रदर्शन किया, जिसके लिए उन्हें मरणोपरांत जॉर्ज क्रॉस से सम्मानित किया गया। यह राजपूत रेजिमेंट को प्राप्त एकमात्र जॉर्ज क्रॉस है।

इस बटालियन की वीरता की गाथा यहीं समाप्त नहीं होती। 1962 में फतेहगढ़ में इस बटालियन को लेफ्टिनेंट कर्नल बृजपाल सिंह, वीरचक्र द्वारा 5वीं बटालियन, राजपूत रेजिमेंट के रूप में पुनः स्थापित किया गया। पुनःस्थापना के बाद, इस बटालियन ने 1965 और 1971 के भारत-पाक युद्ध और श्रीलंका में ऑपरेशन पवन में भाग लिया एवं अपने पराक्रम का लोहा मनवाया। ऑपरेशन पवन के दौरान, निर्मम एवं खतरनाक एलटीटीई का मुकाबला करते हुए सर्वोच्च बलिदान करने वाले इस रेजिमेंट के हवलदार नेपाल सिंह को मरणोपरांत वीर चक्र से सम्मानित किया गया।

इस बटालियन ने ऊंचाई वाले क्षेत्रों में स्थित चुनौतीपूर्ण स्थानों पर ऑपरेशन रक्षक एवं ऑपरेशन विजय में भी भाग लिया। इस बटालियन ने

चुनौतीपूर्ण सियाचिन ग्लेशियर पर ऑपरेशन मेघदूत के दौरान जान की कोई हानि उठाए बिना कुशल कार्यकाल पूरा किया, जोकि बर्फ से ढकी सीमाओं की रक्षा करने वाली किसी भी इकाई के लिए अत्यंत बड़ी उपलब्धि है। राजपूत बटालियन को भारत के तीन राष्ट्रपतियों, डॉ ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, डॉ प्रणब मुखर्जी और श्री रामनाथ कोविंद को गार्ड-ऑफ-ऑनर देने का अनूठा गौरव प्राप्त है। वर्ष 2018 में बटालियन ने रूस के चेबेरकुल में आयोजित एक्स एससीओ शांति मिशन में वैश्विक मंच पर देश का प्रतिनिधित्व किया। यह अपनी तरह का अनूठा सैन्य अभ्यास था जिसमें रूस, चीन और पाकिस्तान सहित सात देशों ने भाग लिया। यह पहला अवसर था जब भारत और पाकिस्तान की सेनाओं ने मैत्रीपूर्ण सैन्य अभ्यास में भाग लिया। पिछले एक दशक में इस बटालियन को लगातार चार यूनिट प्रशस्ति पत्रों से अलंकृत किया गया है। इनमें कूपवाड़ा और पुंछ क्षेत्रों में अपने चुनौतीपूर्ण कार्यकाल के लिए प्राप्त 02 चीफ ऑफ आर्मी स्टाफ यूनिट प्रशस्ति पत्र और शांति काल के दौरान जुटोग एवं श्रीगंगानगर में ड्यूटी के असाधारण प्रदर्शन के लिए दिए गए 02 जीओसी-इन-सी यूनिट प्रशस्ति-पत्र भी शामिल हैं। यह बटालियन, भारतीय सेना की सबसे पेशेवर इंफैंट्री यूनिटों में से एक है।

200 वर्ष के अपने गौरवशाली इतिहास में, राजपूत बटालियन के सूरमाओं ने बर्फ से ढके ग्लेशियरों, पर्वतों, मैदानों, समुद्री तटों और रेगिस्तानों में देश के लिए लड़ते हुए अपनी शूरता को साबित किया है। इस बटालियन के उत्कृष्ट प्रदर्शन ने सदा ही कार्यकुशलता की बुलंद मिसाल पेश की है। इस यूनिट के अनेक बहादुर जवानों ने मौका आने पर अपने अदम्य साहस का परिचय देते हुए जान की परवाह किए बिना, राष्ट्र-सेवा में अपने प्राणों की आहुति दी है। अपने गौरवशाली इतिहास के कारण, वर्तमान में इस बटालियन को प्रचंड पांच के रूप में जाना जाता है।

इस बटालियन को प्राप्त वीरता/विशिष्ट पुरस्कारों की सूची में 1 परम विशिष्ट सेवा पदक, 3 अति विशिष्ट सेवा पदक, 2 वीर चक्र, 1 शौर्य चक्र, 16 सेना पदक (वीरता), 2 युद्ध सेवा पदक, 5 मेंशन-इन-डिस्पैच, 25 चीफ ऑफ आर्मी स्टाफ प्रशस्ति-पत्र, 19 वाइस चीफ ऑफ आर्मी स्टाफ प्रशस्ति-पत्र, 82 जीओसी-इन-सी प्रशस्ति-पत्र और 2 चीफ ऑफ इंटीग्रेटेड डिफेंस स्टाफ प्रशस्ति-पत्र शामिल हैं।

डाक विभाग, राजपूत रेजिमेंट पर स्मारक डाक-टिकट जारी करते हुए गर्व का अनुभव करता है। यह डाक-टिकट इस रेजिमेंट की 200 वर्ष वीरता, शौर्य और देश की रक्षा में इसके योगदान के महत्व को रेखांकित करता है।

### आभार:

डाक-टिकट/प्रथम दिवस आवरण/: सुश्री रवनीत कौर

विवरणिका/विरूपण केशे

पाठ

: प्रस्तावक द्वारा प्रदान की गई सामग्री से संदर्भित

## तकनीकी आंकड़े

### TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	: 500 पैसे
Denomination	: 500p
मुद्रितडाक-टिकटें	: 303565
Stamps Printed	: 303565
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	: Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at [http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY\\_3D.html](http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html)

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 15.00